प्राचीन भारत का इतिहास

HISTORY HONOURS PAPER I

Q. सातवाहन कौन थे। भारतीय इतिहास में उनकी देनों का परीक्षण करें।

Ans:→ दक्षिण भारत में ब्राह्मण साम्राज्य के अधीन सातवाहन वंश का राज्य था। सातवाहन वंश भी शुंगो और कण्वों की तरह ब्राह्मण वंश ही था। स्वयं इस कुल के अभिलेख के अनुसार इसके सभी राजे ब्राह्मण ही थे। प्रसिद्ध नासिक लेख के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि गौमती पुत्र परशुराम के समान ही एक पराक्रमी ब्राह्मण था। इस लेख में उसको भी परशुराम के समान क्षत्रियों का शत्रु और उनकी शान को चूर करने वाला कहा गया है। डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल भी सातवाहनों को ब्राह्मण कुल का बतलाते हैं। अतः इसमें सन्देह नहीं कि सातवाहन कुल ब्राह्मण था। लेकिन पुराणों में सातवाहनों को आंध्र का कहा गया है। लेकिन यह ठीक नहीं जान पड़ता, क्योंकि सातवाहन ने स्वयं अपने लेखों में अपने सातवाहन अर्थात शातकर्णि कहा है। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि आन्ध्रों और सातवाहनों का आपसी संबंध कम से कम आंशिक रूप में अवश्य था। इसलिए आन्ध्र लोग कौन थे। इसको भी जानना आवश्यक है।

आन्ध्र एक जाति थी जो कृष्णा और गोदावरी नदी के मध्य में बसी हुई तेलगू देश में निवास करने वाली थी। ऐतरेय ब्राह्मण नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में सबसे पहले इस जाति का वर्णन है। यह जाति आर्य संस्कृति के प्रभाव से एकदम अलग थी। ऐतरेय ब्राह्मण के ही अनुसार विश्वामित्र के वंशजों ने तेलगू आर्येत्तर जातियों से विवाह कर लिया था। इन विवाहों के फलस्वरूप जिस जाति का उदय हुआ उसे ही आन्ध्र जाति कहा गया। चन्द्रगुप्त मौर्य के

आन्ध्र शासन काल में आन्ध्र जाति की राजनैतिक शक्ति में काफी उन्नति हुई थी। यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने उसके सैन्य बल का वर्णन किया है। पिल्ली महोदय ने लिखा है कि कलिंग के राजा के पास 1,000 घुड़सवार, 700 हाथी और 60,000 पैदल सेनाएं थी। इस जाति के के पास इस तरह से एक विशाल सेना थी। अतः वह एक शक्तिशाली जाति थी।

अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि आन्ध्रों और सातवाहनों में आपसी संबंध कैसा था? सातवाहन लोग अपने को कभी आन्ध्र जाति का नहीं कहते थे। परन्तु पुराण यह बतलाता है कि सातवाहन वंश का संस्थापक सिमुक या शिशुक या सिन्धुक था जो आन्ध्र जाति का था। इस तरह से सातवाहनों के संबंध में स्पष्ट रूप से कहना एक जटिल समस्या है।

सातवाहन वंश का संस्थापक → पुराणों से भरे-पड़े अनेक प्रमाणों के अनुसार (60-37 ई०पू०) सिमुक ने शुंगो और कण्वो की शक्ति खत्म करके आन्ध्र वंश की स्थापना की थी। यही सिमुक सातवाहन साम्राज्य का प्रथम सम्राट हुआ। उसने प्रतिष्ठान या पैठन को अपनी राजधानी बनाई जो उत्तरी गोदावरी नदी के तट पर बसा हुआ था।

दूसरा राजा कृष्ण → सातवाहन वंश का दूसरा राजा कृष्ण था। वह सिमुक का भाई था। उसके शासन काल में सातवाहन राज्य का अत्यधिक विस्तार हुआ था। नासिक के एक शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि उसके शासन काल में वहाँ पर एक गुफा बनायी गयी थी। जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि नासिक तक का क्षेत्र उसके अन्तर्गत था। उस समय कृष्ण की प्रसिद्धि चारों ओर फैली हुई थी।

राजा शातकर्णि → राजा कृष्ण की मृत्यु के बाद शातकर्णि वहाँ का राजा हुआ। वह सिमुक का पुत्र था। वह अपनी विजय और बाहुबल के लिए प्रसिद्ध था।

HISTORY HONOURS PAPER - I

29 THURSDAY • APRIL • 2021

वह भी इतिहास का एक प्रतापी राजा। उसने गद्दी पर बैठने के साथ ही महारथी की अति सुन्दरी कन्या नागनिका से शादी कर अपनी शक्ति तथा प्रभाव में अत्यधिक वृद्धि कर ली थी। उसने अपने बाहुबल से दक्षिण पथ के कई प्रदेशों को हस्तगत कर लिया था जिसके फलस्वरूप उसके साम्राज्य का विस्तार हो गया था। इस तरह से वह सारे दक्षिण पथ का अधिपति बन गया था। इसलिए नानाघाट अभिलेख में उसको 'दक्षिण पथ पति' कह कर पुकारा गया है। उसने पूर्वी मालवा को भी पद-दलित किया था। पुष्यमित्र के समान ही उसने भी अपने जीवन में दो अश्वमेध यज्ञ किया था। ब्राह्मण धर्म के प्रति उसकी श्रद्धा अपार थी। क्योंकि साँची स्तूप के अनुसार उसके चरित्र की यही विशेषता थी। इस तरह स्पष्ट है कि शातकर्णि प्रथम सातवाहन वंश का प्रथम राजा था जो सातवाहनों की शक्ति को विन्ध्याचल पर्वत के उस पार तक पहुँचाया था। इस अभियान में खारवेल को अत्यधिक क्षति हुई थी और शातकर्णि की शक्ति ज्यों की त्यों बनी रह गयी थी। इससे सातवाहन वंश को कोई धक्का नहीं लगा था। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद जब शातकर्णि इस धराधाम पर से उठ गया तब सातवाहन साम्राज्य की शक्ति कम होने लगी क्योंकि उसके दोनों पुत्र अल्पवयस्क थे इसलिए शातकर्णि की विधवा रानी नागनिका ने शासन कार्य सम्हाला। इसके बाद के आन्ध्र सातवाहन वंश के इतिहास का कोई पता नहीं चलता। अतः इसके बाद इस वंश का इतिहास अन्धकार में है।

गौतमी पुत्र शातकर्णि → गौतमी पुत्र शातकर्णि अपने वंश का सबसे महान, कुशल, योग्य, पराक्रमी और प्रतापी सम्राट था। उसने अपने मिटते हुए वंश का फिर से नाम रौशन किया। उसकी शक्ति

प्राचीन भारत का इतिहास

तथा गौरव को फिर से स्थापित किया। अपने गद्दी पर बैठने के साथ ही विदेशी आक्रमणकारी शकों को मार-मार कर अपने देश की पवित्र भूमि से बाहर किया। उसे अपने अनेक समकालीन राजाओं से लोहा लेना पड़ा, सबों के गर्व को चकनाचूर कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। वास्तव में उस समय के राजाओं का दिल उसके भय से काँपता रहता था। नासिक अभिलेख के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि गौतमी पुत्र शातकर्णि ने बड़ी ही योग्यता के साथ शकों एवं यवनों और पल्लव क्षहरातों आदि को विनष्ट कर अपने वंश की शान शौकत को बहुत आगे बढ़ाया। नहपात क्षहरात सरदार था। उसका उसने जो अपमान किया वह इतिहास प्रसिद्ध है।

वह एक कुशल शासक भी था। वह प्रजा प्रेमी था। वह प्रजा के सुख-दुःख को अपना ही सुख दुःख समझता था। वह अपनी प्रजा पर हल्का कर लगाता था। अपराधियों के साथ उसका बर्ताव कठोर था। उसने ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान किया, धर्म के घातक तत्वों को नष्ट किया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों में जो संकीर्णता आ गई थी, उसको उसने दूर करने की कोशिश की। इस कार्य में उसको बहुत हद तक सफलता भी मिली थी।

सातवाहन शक्ति का पतन — यज्ञश्री शातकर्णि के उत्तराधिकारी के बारे में कुछ कहने में इतिहास मूक है। लेकिन यह तो निर्विवाद है कि उसके उत्तराधिकारी अयोग्य एवं शक्तिहीन थे जिसकी वजह से सातवाहन साम्राज्य का पतन हो गया। किन-किन कारणों से इस कुल का विनाश हुआ, यह स्पष्ट रूप से कहना अत्यन्त ही कठिन है।

Dr. D. Jha
Deptt. of History